ओ३म्

❀ श्री परमात्मने नमः ❀

सत्य शब्द संग्रह

का

प्रथम भाग

प्रकाशक—

अमन कमेटी जीन्द

मैनेजर—

कुरुक्षेत्र कृष्ण, जीन्द

ॐ तत्सत श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः।

भूमिका

इस युग में जब कि सर्वत्र अशान्ति का साम्राज्य छाया हुआ था तो उन्होंने शान्ति और परम आनन्द का साम्राज्य स्थापित करने को परमानन्द के रूप में पदार्पण किया। यह महा पुरुष जब से प्रकट हुए हैं तब से पूर्व का इनका समय प्रायः अज्ञात सा ही है।

यह महा पुरुष वास्तव में एक उच्च कोटि के सन्त थे। इनमें योग और ज्ञान पराकाष्ठा

को पहुंच चुके थे। उनकी आत्मा एक महान आत्मा थी जो मानुषी प्रकृति के स्वाभाविक सद्गुणों में दृढ़ रूप से स्थिर होते हुए उनकी सीमा को पार कर चुकी थी और इस लिए संसार तथा उसके आनन्द को पूर्ण वैराग्य की दृष्टि से देखती थी और अपने स्वभाविक शान्त अवस्था के रहस्य को पूर्ण रूप से जानती थी। वे हमेशा ब्रह्मज्ञान और ब्रह्म दर्शन के परमानन्द में निमग्न रहते थे। उनके हृदय में मनुष्य मात्र की भलाई और जीव मात्र से प्रेम था। उनका मन एक बच्चे के मन की भांति प्रसन्न रहता था, उनके दर्शनों से उल्लास प्राप्त होता था और उनका क्षण मात्र का ही

सत्सङ्ग यह उत्कट जिज्ञासा जाग्रत कर देता था कि मनुष्य यह जानने का उद्योग करे की उसका वास्तविक स्वरूप क्या है और ईश्वर क्या है ? उनके उपदेश आत्मा के आवरणों को हटा कर उसका मल धोकर उसे निर्मल और उज्ज्वल कर देता था।

आप सम्वत् १६७० में (श्री महाराज जी) घूमते २ जीन्द में बनखण्डी पर ठहरे थे। इस से पहले भी एक बार महाराज जी जीन्द में पधारे थे। पं० गोपीनाथ वैद्य को दर्शन हुए थे। आप से मुझे पहली बार ला० वृषभान ने मिलाया जब कि मैं और ला० वृषभान आपस में दुकान बजाजी पर इस विषय पर विचार

कर रहे थे कि भगवान् निराकार है या साकार है तो बहस करते २ महाराज जी के पास जो कि बीड़ की तरफ से आ रहे थे जहां कि अब आश्रम बना हुआ है, गौशाला के पास रेलवे फाटक पर दर्शन हुए। महाराज जी ने लकुटया से भूमि पर ओंकार लिखा। महात्मा जी कहा करते थे कि यदि इस बढ़ती हुई जन सख्या को न रोका गया तो संसार में लड़ाई झगड़े होना स्वभाविक है जिसका परिणाम यह हो सकता है कि १२, १२ कोस में दिया जलता नजर आएगा अतः संसार में अमन कायम रखने के लिए बढ़ती हुई जन संख्या पर काबू पाना अत्यावश्यक है।

पुरुष प्रकृति ईश मिल अकार उकार मकार ।
सर्व वेद का मूल है एक शब्द ओंकार ॥
राम नाम के लेत ही होत पाप का नाश ।
ज्यों चिनगारी आगकी पड़े पुरानी घास ॥
तुलसी अपने राम को रीझ भजो चाहे खीज ।
उल्टा सीधा जामिये पड़े खेत में बीज ॥

हमारे प्रभु एक तुम ही ओंकार ॥ टेक ॥

मात पिता गुरु बन्धु सहोदर
धन विद्या परिवार ॥१॥
मन बल बुद्धि प्राण तुम्हीं हो
नयनन में उजियार ॥२॥
हरि होकर हरे रङ्ग में दीसो
पत्र पुष्प फल डार ॥३॥

धरणी आकाश शशि और तारे
बिजली में चमकार ॥४॥
ऊपर नीचे पर्वत सागर
सब तुम अपरम्पार ॥५॥
तुम ही सूरज में हो
गरजो वर्षों अमृत धार ॥६॥
एक धुनी हो तुम से सबकी
तुमरा वार न पार ॥७॥
सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता
हमको दे दातार ॥८॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो
परमानन्द दो प्यार ॥९॥

कर मन नन्दन नन्दन को ध्यान ॥
यह अवसर तोहे फिर न मिलेगा
मेरो कह्यो अब मान।
मोर मुकट पिताम्बर सोहे
कुण्डल झलकत कान ॥
नारायण अलसाने नैना
झूमत रूप निधान।

——

सब से भली मधूकरी, भांत भांत का नाज।
दावा काहू का नहीं बिना विलायत राज ॥
राजा राना राव रंक, बडा जो सुमरे नाम।
कहे कबीर सब में बड़ा जो सुमरे निष्काम ॥

जिसको तू नरतन मानत
आप रूप भगवान है ॥टेक॥
अहंकार ने जब से घेरा
कहन लगा मेरा और तेरा।
भूल गया निज रूप अनेरा
तू सर्वज्ञ सुजान है॥
मैं हूँ देह, देह है मेरी
केवल यही भूल है तेरी।
पांच तत्व की यह तो ढेरी
ज्ञान क्यों भया अज्ञान है॥
बुरी भली करनी जब कर है
बन्धन में तभी तो पड़े है।
निष्क्रय को नहीं कुछ डर है

तोहे कर्म की आन है ॥
सत चित आनन्द भाव संभारो
पाँच कोस ते होजा न्यारो ।
नाम रूप कुछ नाँही निहारो
यही तो निर्मल ज्ञान है ॥

— —

अच्युत अगम अपार तुम तद्वत ब्रह्म अनन्त
परमहंस अज ईश शिव सबके आदि और अन्त
भजो रे मन शुद्ध सच्चिदानन्द ॥टेक॥
सकल ब्रह्माण्ड पुकारे जिन को
अनन्त अपार अखण्ड ।
पुत्र कुमार गगन में तारे
धरणन सूरज चन्द ॥

सभी वस्तु की सुन्दरताई
जितलावैं गोविन्द।
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा
पूरण परमा नन्द॥

बं बं बं महादेव सदाशिव।
हर हर हर महादेव सदाशिव॥
अलख अपार अनाम अगोचर।
ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष हर॥
सत्यनाम सोऽहं दुःख भञ्जन।
ररंकार ओंकार निरञ्जन॥

राधा रमण हरि गोविन्द जय जय ।
गोविन्द जयजय गोपाल जय जय ॥
राधाकृष्ण भज कुन्ज बिहारी ।
मुरलीधर गोवर्धनधारी ॥
शङ्ख चक्र पीताम्बर धारी ।
करुणा सागर कृष्ण मुरारी ॥
बोल हरि बोल हरि हरि बोल ।
गोविन्द माधव मुकुन्द बोल ॥
नारायण हरि ओं ओं ।
ओं ओं ओं ओं ॥

रघुपति राघव राजा राम ।
पतित पावन सीताराम ॥
अचयुतं केशवं राम नारायणम् ।
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम् ॥
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभम् ।
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे ॥
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे ।
हर शिव शङ्कर भव त्रिपुरारे ॥

ओ३म् निरंजन ररंकार प्रभु
सऽहं सत्यनाम करतार ।

अच्युत गुरु गोविन्द दातार
परमानन्द रूप निरधार ॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार
तुमरी ज्योति का उजियार ।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार
नेति नेति कर वेद उचार ।
एक आत्मा अपरम्पार
शंकर ब्रह्म सर्व का सार ।
ओत प्रोत सब में निरंकार
जीवन प्राण आप ओंकार ।
हरि नारायण अग्नि तार
देव देव मैं करहूँ पुकार ।

कृष्णानन्ताऽच्युतहं गौड़

हूँ फट् अल्ला सर्व पसार।

विनवौं तुमको बारम्बार

प्रीतम प्यार करो उद्धार।

नद्धन् गणर त नैनमभ्कार

होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार।

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'

ब्रह्म सत्य, ज्ञानस्वरूप और अनन्त है।

'विज्ञानमानन्दं ब्रह्म'

ब्रह्म विज्ञान एवं आनन्द रूप है।

समाप्त